शिव उपासना कलापम्

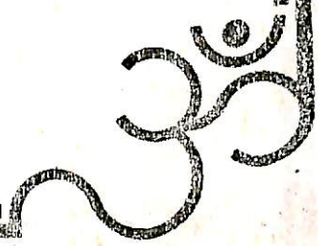

आशीर्वाद

मांगल्य मंदिर ● धर्मक्षेत्र

रतलाम ● मध्य प्रदेश ● भारत

विमोचनः

श्रावण सुद एकादशी

गुरुवार, ता. २-८-१९९०

श्री मोरारी मुनिना वरद हस्ते

रचयिता

प्रेरणा ठाकोर

मांगल्य स्तुति

मांगल्याः वसुधा कुटुम्ब हृदया, श्री भारते भारते
मध्यस्थे खलु दिव्ययज्ञ सहिताः क्षेत्रे महाकालके ।
धर्मक्षेत्र निवासिनो गुरुयुताः श्री प्रेरणादाः सुराः
सप्तस्ते वितरन्त्वनुग्रहकराः आशीर्वचं सर्वतः ।।

मांगल्य मंदिर — धर्मक्षेत्र के प्रथम देव-शिव और शिवा भवानी-सतयुग में शिव-शिवा स्वयं के विवाह हिमालय स्थित त्रियुगीनारायण के पवित्र स्थानक में संपन्न हुए ऐसी मान्यता है — इस परिणयवेदी का हवन आज भी दृश्यमान है, और ऐसा माना जाता है, कि, इस हवनकुंड में स्थित अग्नि सत्युग में प्रकट की गई अग्नि है — शिव और भवानी जगत के आदि देव हैं — उनके स्वरूप का विग्रह रचा कर, उनको मांगल्य मंदिर, धर्मक्षेत्र में प्रतिष्ठित करने का दिव्य अहोभाग्य धर्मक्षेत्र की भूमि को संपन्न हुआ है — और मांगल्य मंदिर प्रिय शिव-शिवा सहित प्रिय सप्तदेवों का निवासस्थान बन रहा है — उनकी छांव में नवग्रह बिराजमान है और प्रतिष्ठित सत्यध्वज दृश्यमान है — प्रत्येक देव को मनोहरी रूप लेने का यहाँ मन हुआ है — ऋषि आशिष यहाँ विद्यमान हैं — प्रिय सप्तदेवों की प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव के दिव्य प्रसंग पर प्रकट की गई अग्नि की हवनवेदी अविरत धर्मक्षेत्र में प्रज्ज्वलित है, जो आत्मा की परमात्मा के संग, जीव की शिव के संग, परिणय वेदी है —

तो यह "शिव उपासना कलापम्" धूर्जटी शिव और उमाभवानी के संग मांगल्य मंदिर के सप्तदेवों को समर्पित

मांगल्य श्लोक

हे भस्मांग! विरक्तिरूप! गुणदं तं प्रेरणा दं शिवं
गंगाभूषित शेखरं स्मरहरं शक्तिस्वरूपं प्रभो ।
त्वामीशं करूणार्णवं शरणदं विद्यानिधिं निर्गुणं
भूतेशं गिरिजापतिं शशिधरं मांगल्यदेवं नमः ।।

भारत की ऋषिसंस्कृति ब्रहमांड की उत्पत्ति की संस्कृति है–विश्वसंस्कृति है परब्रहम की परमतत्त्व की प्रेरणादायिनी वैदिक संस्कृति है, जो परमतत्त्व की इश्वरीय प्रेरणा से भारत के मंत्र द्रष्टा, स्वप्न द्रष्टा और युग द्रष्टा ऋषियों द्वारा वही, जिन्होंने जगत को पुनित ऋचाएं प्रदान की, संगीत प्रदान किया, उपनिषद के बोध प्रदान किये, पुराणों के हृदयंगम स्तुति-स्तोत्र प्रदान किये और मानवजीवन को "धर्मं चर" "सत्यं वद" के विश्वआदेश सहित, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का प्रेमपूर्ण विश्वमंत्र दिया –

भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमक्षभिर्जजत्राः ।
स्थिरै रंगै स्तुष्टुवाघुसस्तनुभिः
व्वयशेमहिदेवहितंयदायुः ।।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ।।

ऋगवेद, यजुर्वेद-सामवेद और अथर्ववेद — इन चार वेदों में ब्रहमांड का ज्ञान और विश्वसमस्त का जीवन समाविष्ट है –

वेद स्तुतिः

आब्ब्रह्मन्नब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराज
न्यः शूरऽइखळयोतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्री
धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः त्पुरन्धिर्व्योषांजिष्णूरथे
ष्ठव्याः सभेयोयुवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निका
मेनिकामेनःत्पर्ज्जन्र्योंव्वर्षतुफलवत्त्योनऽओषधयः
पच्व्ययन्तांय्योगक्षेमोनकल्प्यताम्

ऋग्वेदः

द्रविणोदा द्रविण सस्तु रस्य द्रविणोदाः सन रस्य पर्यसत् ।
द्रविणोदा वीरवती मिषन्नो द्रविणो दारासते दीर्घमायुः

सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात सविता धरात्तात् ।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानो रासतां दीर्घमायुः

शुक्ल यजुर्वेदः

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचप्र तिष्ठत नेष्ट्रा दृतुभिरिष्यत ।। १ ।।

सवितात्वा सवानाघुं सुवता मण्गि गृर्हपतीना घुं सोमो
बनस्पतीनां । बृहस्पतिषव्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठयाय रुद्रः
पशूभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्म पतीनाम् ।। २ ।।

सामवेदः

ओग्राई । आयाहीऽ३ । वोइतोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ ।
गृणानो ह । व्यदातोयाऽ२इ ।तोयाऽ२इ । नाइ
होतासाऽ२३ ।त्साऽ२इ । बाऽ२३ ४औहोवा । हीऽ२३४पी ।।

पुनानः सोमाऽ३ धारा २३४ या । आपोवसा नो
अर्षयारत्न धायोनिभृतस्य साऽरइ दसाइ ।औहा ऽ३
उषा उन्सोदेवो हिरा ऽ२३ हाइ औहाऽ३ उवा यया ।
औ ड ३ हौवा । हो ऽ५ इ ।डा।।

अथर्ववेदः

उच्चापतन्तं मस्तं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम् ।
पश्यामत्वा सवितारंयमाहु रजस्रं ज्योति र्यद विन्द दत्रिः ।

नैनं रक्षांसि न पिशाचः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजघुं ह्यतत ।
यो बिभर्ति दाक्षायणंहिरण्यं सजीवेषु कृणुते दीर्घमायुः ।।

वेदों की गहनता गहनतम् होने के कारण, भारत की ऋषि संस्कृति ने जो सनातन धर्म का, वैश्विक धर्म का साक्षात्कार किया था, वह उपनिषदों में प्रकट हो कर अठारह पुराणों में प्रसिद्ध है-इन पुराणों को पंचम वेद कहा गया है-जिन में -- जिस देव को समर्पित पुराण हो, उस देव की उपासना परब्रह्म के रूप में की गई है और समस्त पुराणों का सर्वश्रेष्ठ निचोड़ वाल्मीकि रामायण तथा भगवान वेदव्यासरचित श्रीमद् भागवत में समाविष्ट होनेसे, वेद से लेकर इन सर्व शास्त्रों का अर्क श्रीमद् भगवद् गीता में है, जो महागान भगवान श्रीकृष्णने प्रिय अर्जुन को महाभारत के महायुद्ध, मृत्यु के महोत्सव के समय दिया हुआ उपदेश है, जिसका यह अति सूक्ष्मतम अर्क –

सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिश्यामि मा शुचः ।।

तो — शिवपुराण इन अठारह पुरणों में से एक है-इन बारह संहिताओं से युक्त शिवपुराण के रचयिता भूतभावन धूर्जटी महादेव शिवजी स्वयं है और उन्होंने सनत्कुमारों को प्रथम इनका श्रवण कराया-सनत्कुमारोंने भगवान् व्यासमुनि को इस परम रस का पान कराया-तदुपश्चात् भगवान् वेदव्यासजी ने पृथ्वीजीवीयों के परमकल्याण के लिये सप्तसंहिता युक्त शिवपुराण की रचना की —

शैवं पुराणतिलकं खलु सत्पुराणं
वेदान्तवेद विलसत् परवस्तु गीतम् ।
यो वै पठेच्च श्रुणुयात्परमादरेण
शंभुप्रियः स हि लभेत् परमां गति वै ।।

महादेव शिवजी, ब्रह्मस्वरूप, कला-फलरहित तथा कला-फलसहित हैं — निराकार हैं — और आकारसहित भी हैं-लिंग की प्रधानता हैं और साकार — निराकार रूप से ब्रह्मसंज्ञक भी हैं —

असितगिरिसमंस्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।

कल्पनातीत काल में शिवलिंग की उत्पत्ति को कथा अति मधुर है — पर से भी पर ऐसे परब्रह्म को लीला करने का मन हुआ-परमात्मा परब्रह्म की इच्छाशक्ति स्वयं आद्याशक्ति है, शिव को समर्पित शक्ति है, जिन्हों ने निमिषमात्र में एक महामाया प्रकट की और मानो शून्य में नृत्य का आविर्भाव हुआ-गहन गहरा नाद उठा और अंतरीक्ष में गूंज रहा —

ॐ

चिदानन्द स्वयं नाद बना और सर्व दिशाएं ॐकार से गूँज उठी-

ॐ

पांच तत्त्वों का निर्माण हुआ:

पंचतत्व स्तुतिः

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः
सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद् वायुष्च प्राणष्च
मुखा दग्निरजायत् ।
नाभ्या आसी दन्तरिक्षघुं
शीर्ष्णो धौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूर्मिर्द्दिशः श्रोत्रा
तथा लोकाँ अकल्पयन् ।

पृथ्वी स्तुतिः

भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया
विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवींजच्छ
पृथिवीन्द्दघुं ह पृथिवी माहिघुँ सीः
महीधौः पृथिवी चन इमं यज्ञं
मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः ।।

जल स्तुतिः वरुणस्योस्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यासि
वरुणस्य ऋतसदन मसि वरुणस्य
ऋत सदनमा सीद ।।

तेज स्तुतिः आकृष्णे नरजसा वर्तमानो निवेशय-
न्नमृतं मृत्यंच हिरण्ययेन सविता
रथेना देवो जाति भुवनानि पश्यन् ।।

वायु स्तुतिः वायोषेते सहस्त्रिणो रथा स्तेभिरा
गहि नियुत्वान्तसोम पीतये ।।

आकाश स्तुतिः घृतङ्घृत पावानः पिबत व्वसां वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हवि रसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽउद्दिशो
दिग्भ्यः स्वाहा ।।

स्थल, काल और गति का प्राकट्य हुआ-अनेक विश्व प्रकट होने लगे जिनमें से एक विश्व अपना भी था-विकास के पथ पर प्रगतिमान हो रहा अपना विश्व आकार धारण करने लगा-तारे, सूर्य, चंद्र और ग्रह के साथ अपनी पृथ्वी गतिमान हुई-क्षीरसागर में शेषनाग की शैया पर भगवान् विष्णु, महालक्ष्मी सहित विराजमान हुए —

शांताकारं भूजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

अंतरक्षि में से ब्रह्मा प्रकट हुए-अहंकारयुक्त ब्रह्माने, 'कौन आदि देव' इस प्रश्न पर भगवान् विष्णु से युद्ध का प्रारंभ किया-जब इन देवों के शस्त्रों से त्रिलोक त्रस्त थे, तब महादेव शिवजी अग्नियुक्त विशाल स्तंभ का आकार धारण किये निराकार रूप में प्रकट हुए -

तो परमकल्याणकारी भूतभावन धूर्जटी महादेव शिवजी के साकार और निराकार रूप का स्तुतिगान भारत के ऋषियों ने मुक्त कंठ से हृदयंगम् स्तुति-स्तवनों में किया है —

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भूजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवंभवानीसहितं नमामि ।।

वन्दे देव उमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुंदप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।।

शान्ताकारं शिखरशयनं नीलकंठं सुरेशम्
विश्वाधारं स्फटिक सदृशं शुभ्रवर्णं शुभांगम् ।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वंदे शंभुं भवभयहरं सर्व लोकैकनाथम् ।।

धूर्जटी शिव महादेव भारत में बारह स्थानों पर ज्योतिर्लिंग स्वरूप में बिराजमान है — भगवति श्रुति "द्वादशाङ्गो वै पुरुषः" की सराहना करती है —

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं ममलेश्वरम् ।।१।।

परल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ।।२।।

वारणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे ।
हिमालये तु केदारं ध्रुष्णेशं च शिवालये ।।३।।

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।।४।।

इति द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुतिः सम्पूर्णम्

भगवान प्रेम के अधीन है, पदार्थ के अधीन नहीं. इसी लिये पृथ्वी के दिव्य गान श्रीमद् भगवद् गीता में प्रि ' श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं —

पत्रं पुष्पं फलं तोऽयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्यु पहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।।

आदिगुरु शंकराचार्यजीने इस भाव जगत के महिमा को प्राधान्य देते हुए, "शिव मानसपूजा स्तोत्रम्" की रचना की. भाव जगत में जब भक्त आत्मविभोर हो कर धूर्जटी शिव की मानसपूजा करता है,तब वह"स्व"को विलीन कर, शिवमय हो जाता है और कहता है: "हे शंभो, मैं जो जो कर्म करता हूं, वह सर्व तुम्हारी ही उपासना है." इस दिव्यभाव को रममाण करता हुआ, —

शिव मानसपूजा स्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्यांबरम्
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम् ।
जातिचंपकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृहयताम् ।।१।।

सौवर्णे नवरत्नखंडरचिते पात्रे घृतं पायसम्
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रंभाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखंडोज्जवलम्
तांबुलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।।२।।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम्
वीणाभेरीमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ।।३।।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम् ।।४।।

करचरणकृतंवाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसंवापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शंभो ।।५।।

।

इति श्री शंकराचार्य विरचितम् शिवमानसपूजा स्तोत्रं सम्पूर्णम्

आदि गुरु शंकराचार्यजी महाराज "शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्" के रचयिता हैं -"नमः शिवाय" महामंत्र के प्रत्येक अक्षर अनुसार क्रमशः श्लोक की रचना की गई है और प्रत्येक श्लोक के अंत में इस महामंत्र "नमः शिवाय" को प्रतिस्थापित् किया गया है -भौतिक जगत् के जितने घातक तत्त्व है वह सर्व शिवजी के आभूषण है.-शिवजी कष्टहर-कल्याणकारी हैं,वही सत्य है और इसी लिये सत्यं "शिवम्" भी है और "सुन्दरम्" भी हैं -शिव और उमा भवानी का तापस परिणय, शिव धूर्जटी की प्रखर तपश्चर्या-"स्व" — के लिये नहीं, सर्व के लिये है. तो-इस संसार की माया से विरक्त हो कर "स्व" के अहम् को विलीन कर "नमः शिवाय" के जपन से आत्मा का परमात्मा से मिलन का प्रयत्न करना और जीव का शिव से ऐक्यरूप होना, वही अद्वैत, और इस दिव्य स्थिति का पवित्रकारी माध्यम वसुंधरा का महामंत्र "नमः शिवाय," जो इस "पंचाक्षर स्तोत्रम्" में प्रस्थापित किया गया है —

शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय
तस्मै नकाराय नमः शिवायः ।।१।।

मंदाकिनीसलिलचंदनचर्चिताय
नंदीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मंदारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृंद
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकंठाय वृषभद्धजाय
तस्मै शिकारायः नमः शिवाय ।।३।।

वसिष्ठकुंभोद्भवगौतमाय
मुनींद्रदेवार्चितशेखराय ।
चंद्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगंबराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।५।।

पंचाक्षरमिंद पुण्यं यः पठेछिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्रोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

इति शंकराचार्यं विरचितम् शिवं पंचाक्षर स्तोत्र सम्पूर्णम्

शिवभक्त गंधर्वराज पुष्पदंत अति भक्तिपूर्ण हृदय से शिवजी का पूजन-अर्चन करते हैं-अदृश्य रह कर शिवजी को शृंगार करने के लिये काशीराज की पुष्पवाटिका से वह पुष्प ले जाते-प्रतिदिन काशीराज सोचते कि कौन यह पुष्प ले जाता होगा? एक दिन , इस पुष्पवाटिका में काशीराज ने शिवनिर्माल्य बिल्व पत्र की आमन्या रख दी — पुष्पदंत पुष्प नहीं ले जा सकते, और उस समय उनके भक्तिपूर्ण भावविभोर हृदय में जिस स्तोत्र की स्फुरणा हुई वही यह---

शिव महिम्नः स्तोत्रम्

श्री पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी-
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर! निरपवादः परिकरः ।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदेत्वर्वाचीनेपतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन! बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।

तवैश्वर्य्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादा न इति च ।
अतर्क्यैश्वर्य्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ।।५।।

अजन्मानोलोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।७।।

महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयतव वरद! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयतिः ।।८।।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मत इव
स्तुवनञ्जिह्रेमित्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलति ।।१०।।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरम्
दशास्यो यदबाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्म-श्रेणी-रचित-चरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम् ।।११।।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठात्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यतिखलः ।।१२।।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न
कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ।।१३।।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपिश्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः १४।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्यविशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत
स्मरःस्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यःपरिभवः ।।१५।।

महीं पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।।१६।।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ।।१७।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलुपरतन्त्राः प्रभुधियः ।।१८।।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर! जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवंकर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमन्हाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणंदेवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैतित्वामद्धाबत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमभिधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याहलादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये-
दधत्यन्तस्तत्त्वंकिमपियमिनस्तत्किलभवान् ।।२५।।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वंमसि पवन स्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमुधरणिरात्मात्वमितिच ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम्
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वंन भवसि ।।२६।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णै स्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ।।२७।।

भवःशर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मिभवते ।।२८।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मैते तदिदमिति शर्वाय च नमः ।।२९।।

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैर्गुण्यैर्शिवाय नमो नमः ।।३०।।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम्
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् । ।३१।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।३२।।

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य
सकलगुणवरिष्ठ पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।३३।।

अहरहरनवेद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ।।३४।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३५।।

दीक्षादानंतपस्तीर्थज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्यकलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।३६।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलैर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।३७।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व भाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३८॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुम्
पठति यदि मनुश्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥

श्री पुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयताञ्च सदाशिवः ॥४१॥

तव तत्त्वं न जानामि कीद्रशोऽसि महेश्वर
यादृशोऽसि महादेव ! तादृशार्य नमो नमः ॥४२॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः !
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४३॥

इति पुष्पदन्त रचितम् शिव महिम्नः स्तोत्रं संपूर्णम्

''शिवषडक्षर स्तोत्रम्'' के रचयिता अज्ञात है-यह स्तोत्र रूद्रयामल पद्धति में है-''ॐ नमः शिवाय'' महामंत्र के ६ अक्षर है -प्रत्येक अक्षर से एक श्लोक की रचना करके इस स्तोत्र की रचना की गई है-विरक्तिमय भक्तिरस से प्रचूर इस स्तोत्र का गान भक्त को शिवलोक और शिवभक्ति का वरदान प्रदान करता है - स्तोत्रम्'' के अंतरंग में प्रवेशकर रममाण होते हुए शिवसान्निध्य की दिव्य अनुभूति होती है. मनहृदय की इच्छा को पूर्ण करके मोक्षमार्ग की और हृदय को गतिमान होने की प्रेरणा प्रदान करते 'ॐ' कार के मंत्र का योगी निरंतर जपन करते हैं और उसी 'ॐ'कारका दिव्य नाद सृष्टि की रचना के समय ब्रह्मांड में प्रथम गूंज रहा था-ऋषि-देव और मुमुक्षु मानव इस ''ॐ नमः शिवाय'' के परम मंत्र को आत्मसात् करके सतत गतिशील रहते रक्त की लय में उसको गतिमान करते हैं-उनका रोम रोम 'ॐ'कार से गूंज उठता है और शिवमय होने से आत्मा का परमात्मा के साथ दिव्य मिलन होता है-पुनितकारी ''ॐ नमः शिवाय'' को प्रस्थापित करता हुआ यह —

शिवषडक्षर स्तोत्रम्

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ।।१।।

नमंति ऋषयो देवाः नमन्त्यपसररसां गणाः ।
नराः नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः ।।२।।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः ।।३।।

शिवं शांतं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ।।४।।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः ।।५।।

यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरूः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ।।६।।

षडक्षरमिदं स्तोत्रं यःपठेतच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।७।।

इति श्रीरूद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे शिवषऽक्षरस्तोत्रं संपूर्णम्

न यावत् उमानाथपादारविन्दम्
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्
न तावत्सुखं शांतिसंतापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासः ॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजा
नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम्
प्रभो पाहि आपन्नमामीश! शंभो! ॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥९॥

इत रूद्राष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्

परमवेदांती-परमज्ञानज्योति आदि गुरु शंकराचार्यजी "शिवनामाष्टक स्तोत्रम्" की रचना करते समय परम भक्त के स्वरूप में प्रकाशित होते हैं-परम भक्तिरस से पूर्ण इस स्तोत्र में परमतत्त्व धूर्जटी शिव महादेव को विभिन्न नामों से संबोधित कर, संसार के दुःख से जीव का रक्षण करने की आर्जवपूर्ण प्रार्थना की गई है –

इस प्रखर कलिकाल में नाम की महिमा अपार है–शिवजी तो पारसमणी है-शिवनाम का स्पर्शमात्र तारणहार है–आदि गुरु शंकराचार्यजी रचित "शिवनामाष्टक स्तोत्रम्" मानवहृदय को भक्तिपूर्ण प्रेमाब्धि में स्नान कराते हुए परमतत्त्व शिव के साथ आत्मसात् होने की अनुभूति कराता है - यह —

शिवनामाष्टक स्तोत्रम्

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरजेश महेश शम्भो ।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथम्
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥१॥

हे पार्वती-हृदयवल्लभ चंद्रमौले!
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीश चाप ।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलयं प्रमथेश शर्व ।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते माम्
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥३॥

हे विश्वनाथ शिव शंकर देव देव
गंगाधर प्रमथनायक नंदिकेश ।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥४॥

वाराणसी पुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्ष महाकाल विभो गणेश ।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥५॥

श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधीनाथ ।
भस्माङ्गराग नृकपालकलापमाल
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥६॥

कैलासशैलविनिवास वृषांकपे हे
मृत्युंजय त्रिनयन त्रिजगन्निवास ।
नारायणप्रिय मदाषह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥७॥

विश्वेश विश्वभवनाशित विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैक गुणाभि वेशे ।
हे विश्वबन्धु करुणामय दीनबन्धो
संसारदुःखगहनात्जगदीश रक्ष ॥८॥

गौरीविलास भूवनाय महेश्वराय
पंचाननाय शरणागत रक्षकाय ।
शर्वाय सर्वजगतां अधिकृताय
तस्मै दारिद्रय दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥९॥

इत श्री शंकराचार्य रचितम् शिवनामाष्टक स्तोत्रं संपूर्णम्

धुर्जटी शिव का अलौकिक वर्णन और महिमागान करते हुए रचयिता का भक्तहृदय प्रार्थना करता है, कि "हे चन्द्रशेखर प्रभो! तुम हमारी रक्षा करो।" "चन्द्रशेखर" संबोधन करते हुए यह सूचित किया गया है कि, "हे भस्मार्चित धूर्जटी शिव! वक्र चंद्र को तुम धारण किये हुए हो, इसी लिये वह पूजनीय है-तो हे प्रभो, वक्र भी तेरी कृपा से पूजनीय होता है, तो, हे चन्द्रशेखर हमारा मृत्युभय दूर कर।" जगत का एकमात्र दर्शित निश्चित भविष्य जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अवश्य है-जीवनयात्रा जन्म से मृत्यु की मंगलमय यात्रा है-और यही भावि ज्ञात है-तद्यपि मानव को सब से अधिक भय मृत्यु का है-तो इस भय को त्याग कर शिवमय बनने की आरत जब अंतर में जाग्रत होती है-तब हृदय में चन्द्रशेखरस्वरूप शिवजी के लिये आविर्भाव जाग्रत होता है,-इस स्तोत्र के रचयिता अज्ञात है, लेकिन उनका हृदय इस कमनीय चन्द्रशेखराष्टक स्तोत्रम के साथ हो है-

चन्द्रशेखराष्टक स्तोत्रम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।।१।।

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृंगनिकेतनं
सिञ्जनीकृतपन्नगेश्वर मुताननसायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवंदितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।२।।

पंचपादप पुष्पगंध पदांबुज द्वयशोभितम्
भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ।।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।३।।

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पंकजासन पद्मलोचनपूजितांघ्रिसरोरुहम् ।
देवसिंधुतरंगसीकरसिक्तशुभ्रजटाधरम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।४।।

यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजंगविभूषणम्
शैलराजसुता परिष्कृतचारुवामकलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।५।।

कुंडलीकृतकुंडलेश्वरकुंडलं वृषवाहनम्
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अंधकांधकमाश्रितामरपादपं शमनांतकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।६।।

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणम्
दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं सकलाघसंघनिबर्हणम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥७॥

भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदंबरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम् ।
सोमवारिदभू हुताशनसोमपनिलखाकृतिम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥८॥

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परम्
संहरंतमपि प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयंतमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥९॥

मृत्युभीतमृकंडसुनुनुकृतस्तवं शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत् ।
पूर्णमायुररोगितामखिलार्थसंपदमादरम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥१०॥

इति श्रीचंद्रशेखराष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्

चन्द्रशेखराय नमो
गंगाधराय नमो
हर हर हराय नमो
शिव शिव शिवाय नमो

नमो ॐ नमो ॐ
हरी ॐ हरी ॐ

आदि गुरु शंकराचार्यजी ने भूतभावन शिवजी के सगुण स्वरूप का मधुर वर्णन किया है 'वेदसार शिवस्तव स्तोत्रम्' में विश्वेश्वर प्रभु शिव जगदव्यापी शंकर भगवान् को प्रसन्न करने की विनती की गई है -वेद में धूर्जटी शिव का विविध रूप से जो वर्णन किया गया है — इसका सार यह —

वेदसार शिवस्तवः स्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये
महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि ।।१।।

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्ग भूषं ।
विरूपाक्षमिन्द्वर्क वहिनत्रिनेत्रं
सदानन्दमीडे प्रभु पञ्चवक्त्रम् ।।२।।

गरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं
भवानीकलत्रं भजे भावगम्यम् ।।३।।

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले
महेशान शूलीन् जटाजूट-धारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ।।४।।

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकारमोङ्कार वेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ।।५।।

न भूमिर्न चापो न वहिन र्न वायु
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे ।।६।।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानां ।
तुरीयं तमःपारमाद्यंत हीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ।।७।।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोग गम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञान गम्य ।।८।।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ।।९।।

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाश नाशिन् ।
काशीपते करुणया जगदेतदेक
त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोसि ।।१०।।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्यैव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्यैव गच्छति लयं भजतेददीश
लिङ्गात्मकं हर चराचर विश्वरूपिन् ।।११।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतो वेदसार शिवस्तवः स्तोत्रं सम्पूर्णः

जब ''शिवोऽहम्'' भाव हृदय में जागृत होता है और-सत्, चित् और आनंद की अनुभूति होने लगती है - तब

चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।१।।

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायु —
र्न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोशः ।
न वाक् पाणिपादौ न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोहम् ।।२।।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।३।।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।४।।

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
न बंधुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।५।।

अहं निर्विकल्पो निराकाररुपो
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।६।।

ब्रहमांड की उत्पत्ति के पश्चात्, इस संसार की रचना के पूर्व शिव और शिवा अर्धनारीश्वर रूप में प्रकट हुए - और - इस मनोहारी रूप की स्तुति —

अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्

मन्दारमाला-कुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ।।१।।

एकः स्तनस्तुङ्गतरः परस्य वार्तामिव प्रष्टुमगान्मुखाग्रम् ।
यस्याः प्रियाधस्थितिमुद्वहन्त्याः सा पातु वः पर्वतराजपुत्री ।।२।।

यस्योपवीतगुण एव फणावृतैकवक्षोरुहः कुचपटीयति वामभागे ।
तस्यै ममाऽस्तु तमसामवससानससीम्ने चन्द्रार्धमौलिशिरसे महसेनमस्या ।।३।।

स्वेदार्द्रवामकुच-मण्डनपत्रभङ्ग-संशोषि-दक्षिणकरांगुलिभस्मरेणुः ।
स्त्री-पुं-नपुंसकपदव्यतिलंघिनी वः शम्भोस्तनुः सुखयुत प्रकृतिश्चतुर्थी ।।४।।

इत्यर्धनारीश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम्

'बिल्व पत्र' शिवजी को अत्यंत प्रिय है - और - बिल्व पत्र उनको अर्पण किये बिना उनकी उपासना संपूर्ण नहीं होती — यह —

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् ।
त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम् ।।१।।

त्रिशाखैबिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रः कोमलैः शुभैः ।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ।।२।।

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ।।३।।

शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत् ।
सोमयज्ञ-महापुण्यमेकबिल्वं शिवार्पणम् ।।४।।

दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
कोटिकन्या-महादानमेकबिल्वं शिवार्पणम् ।।५।।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम् ।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ।।६।।

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोरपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम् ।।७।।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ।।८।।

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ।।९।।

इति बिल्वाष्टकं स्तोत्रं संपूर्णम्

'शिवतांडव स्तोत्रम्' के रचयिता दशानन रावण है-इस प्रखर शिवभक्त ने तपश्चर्या और साधना के समय में की हुई शिव की आराधना तांडव स्वरूप में स्फुरित हुई-सर्जन और विसर्जन यह तो नियति है-आनंद और शोक यही जीवन है-इन दोनों अवस्थाओं को सम्यक् स्थितप्रज्ञ दृष्टिभाव से हृदय में धारण करनेवाले इष्ट तत्त्व ही शिव-सर्वज्ञाता होने पर भी अभेद्य मौन कवच को धारण किये हुए भगवान् शिव कभी जगत् के कल्याण के कारण ही प्रलयंकर बनते है और वही सर्जन होता है नादब्रह्म का प्रतिघोष-भक्तिसभर भावजगत में धूर्जटी शिव महादेव की महिमा और नादभैरव का नर्तन-इन त्रितत्त्वों की मिलन त्रिवेणी ही यह हृदयंगम् —

शिवतांडव स्तोत्रम्

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके,
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।।१।।

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं,
चकारचंडतांडवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।२।।

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर—
स्फुरद्दिगन्तसन्तति प्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि,
क्वचिद्दिगम्बरे मने विनोदमेतु वस्तुनि ।।३।।

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणा मणि प्रभा—
कदम्बकुङ्कुम द्रव प्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनोविनोदमद्भुतंविभर्तु भूतभर्तरि ।।४।।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा,
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकं ।
सुधांमयूखलेखया विराजमानशेखरम्,
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तुनः ।।५।।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरः
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालयानिबद्धजाटजूटकः,
श्रियैचिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ।।६।।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्वल—
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक—
प्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचनेरतिर्मम ।।७।।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर—
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्ध बद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः,
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।।८।।

प्रफुल्ल—नीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा,
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदंपुरच्छिदं भवच्छिदंमखच्छिदं—
गजच्छिदान्धकच्छिदंतमन्तकच्छिदंभजे ।।९।।

अगर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमञ्जरी—
रसप्रवाहमाधुरीबिजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरांन्तकं भवान्तकं मखान्तकं,
गजान्तकान्धकान्तकमनन्तकान्तकंभजे ।१०।

जयत्यदभ्रविभ्रमस्फुरद्भुजङ्गमश्वसद्,
विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिमिन्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल—
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।११।।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो—
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवंभजाम्यहम् ।।१२।।

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्,
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिंवहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः,
शिवेतिमन्त्रमुच्चरन्सदासुखी भवाम्यहम् ।१३।

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका,
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिका मनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं,
परःश्रियःपरम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः ।।१४।।

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी,
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहू तजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः,
शिवेतिमन्त्र भूषणाजगज्जयायजायताम् १५।

इमंहिनित्यमेवमुक्तमुत्तमोतमस्तवम्
पठन्स्वरन्भ्रूवनरो विशुद्धमेऽति संततम् ।
हरे गुरौ सभक्तिमाशु यादिनान्यथा गतिम्
विमोहनम्हि देहिन तु शंकरस्य चिंतनम् ।।१६।।

इति रावणविरचितं शिव तांड्व स्तोत्रं संपूर्णम्

नटराज स्तुति

सत सृष्टि तांडव रचयिता
नटराज राज नमो नमः ....
हे आद्य गुरू शंकर पिता
नटराज राज नमो नमः ....
गंभीर नाद मृदंगना धबके उरे ब्रह्माडना
नित होत नाद प्रचंडना
नटराज राज नमो नमः ....
शिर ज्ञान गंगा चन्द्रमा चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां
विषनाग माला कंठ मां
नटराज राज नमो नमः ....
तवशक्ति वामांगे स्थिता हे चन्द्रिका अपराजिता
चहु वेद गाये संहिता
नटराज राज नमो नमः ....

श्री शिव नीरांजनम्

जय गंगाधर हर शिव, जय गिरिजाधीश
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश .... हर हर महादेव
कैलासे गिरिशिखरे, कल्पद्रुम विपिने
शिव कल्पद्रुम विपिने
गुंजति मधुकर पूंजे कुंजवने गहने .... हर हर महादेव
कोकिल कूजति खेलति, हंसावन ललिता - शिव.....
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद संहिता .... हर हर महादेव
तस्मिन्ललित सुदेशे शाखा मणि रचिता - शिव.....
तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता .... हर हर महादेव
क्रीडां रचयति भूषा रंजित निजमीशम् - शिव.....
ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमतिते शीर्षम् .... हर हर महादेव
विबुधवधू बहुनृत्यति हृदये मुदसहिता - शिव.....
किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वर सहिता .... हर हर महादेव

नटराज स्तुति

सत सृष्टि तांडव रचयिता
टराज राज नमो नमः ....
हे आद्य गुरू शंकर पिता
टराज राज नमो नमः ....
गंभीर नाद मृदंगना धबके उरे ब्रह्माडना
नित होत नाद प्रचंडना
नटराज राज नमो नमः ....
शिर ज्ञान गंगा चन्द्रमा चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां
विषनाग माला कंठ मां
नटराज राज नमो नमः ....
तवशक्ति वामांगे स्थिता हे चन्द्रिका अपराजिता
चहु वेद गाये संहिता
नटराज राज नमो नमः ....

श्री शिव नीरांजनम्

जय गंगाधर हर शिव, जय गिरिजाधीश
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश .... हर हर महादेव
कैलासे गिरिशिखरे, कल्पद्रुम विपिने
शिव कल्पद्रुम विपिने
गुंजति मधुकर पूंजे कुंजवने गहने .... हर हर महादेव
कोकिल कूजति खेलति, हंसावन ललिता - शिव.....
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद संहिता .... हर हर महादेव
तस्मिन्ललित सुदेशे शाखा मणि रचिता - शिव.....
तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता .... हर हर महादेव
क्रीडां रचयति भूषा रंजित निजमीशम् - शिव.....
ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमतिते शीर्षम् .... हर हर महादेव
विबुधवधू बहुनृत्यति हृदये मुदसहिता - शिव.....
किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वर सहिता .... हर हर महादेव

।। मंत्रपुष्पांजलि ।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः । ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिन नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणोददातु ।। कुबेराय वैश्रवाणाय महाराजाय नमः ।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठय राज्य महाराज्यमाधिपत्यमयं । समंतपर्याईस्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात् ।। पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराळिती । तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरूतस्याऽवसन् गृहे ।। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।।

।। प्रदक्षिणा श्लोक ।।

पदे पदे या परिपूज्य केभ्यः
सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति ।

तां सर्वपापक्षय हेतुभूतां
प्रदक्षिणां ते पशुपतेः करोमि ।।

।। क्षमापन श्लोक ।।

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, सदा शिवायेति समर्पयामि ।।

SIDE A

1.	मांगल्य स्तुति	पुरुषोत्तम उपाध्याय-नीना दलाल
2.	मांगल्य श्लोक	रविन्द्र साठे
3.	भद्रं कर्णेभिः	गौरव ध्रु
4.	सर्वेत्र सुखिनो	रूपकुमार राठोड-गौरव ध्रु
5.	वेद स्तुति	रूपकुमार राठोड-गौरव ध्रु
6.	सर्व धर्मान...	प्रेरणा
7.	शैवं पुराणतिलकं...	रूपकुमार राठोड
8.	असितगिरी...	रूपकुमार राठोड
9.	ॐ	रविन्द्र साठे
10.	ॐ गुंजन	रविन्द्र साठे
11.	पंचतत्व स्तुति	रूपकुमार राठोड-गौरव ध्रु
12.	शांताकारं भुजगशयनं	पुरुषोत्तम उपाध्याय

SIDE B

1.	कर्पूर गौरं	पुरुषोत्तम उपाध्याय, रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु
2.	वंदे देव	गौरव ध्रु
3.	शांताकारं शिखरशयनं	रूपकुमार राठोड-गौरव ध्रु
4.	द्वादश ज्योतिर्लिंग	हरीहरन-नीना दलाल
5.	शिवमानसपूजा स्तोत्रम्	नीना दलाल
6.	शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्	रूपकुमार राठोड-नीना दलाल

2: SIDE A

१.	शिव महिम्नः स्तोत्रम्	रविन्द्र साठे, रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु, सोली कापडिया

2: SIDE B

१.	शिव महिम्नः स्तोत्रम्	रविन्द्र साठे, रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु, सोली कापडिया
२.	शिवषऽक्षर स्तोत्रम्	हरीहरन-हंसा दवे
३.	रुद्राष्टक स्तोत्रम्	पुरुषोत्तम उपाध्याय-गौरव ध्रु

3: SIDE A

१.	शिवनामाष्टक स्तोत्रम्	पुरुषोत्तम उपाध्याय-हेमांगिनी देसाई
२.	चंद्रशेखराष्टक स्तोत्रम्	रूपकुमार राठोड-नीना दलाल

3: SIDE B

१.	चंद्रशेखराय नमो	सोली कापडिया
२.	वेदसार शिवस्तवः स्तोत्रम्	हंसा दवे, हेमांगिनी देसाई, नीना दलाल, सोनाली बाजपाई
३.	चिदानंद रूपःशिवोऽहम् शिवोऽहम्	रूपकुमार राठोड, रविन्द्र साठे, गौरव ध्रु

4: SIDE A

१.	अर्धनारीश्वर स्तोत्रम्	गौरव ध्रु
२.	बिल्वाष्टकम्	रविन्द्र साठे
३.	शिव तांडव स्तोत्रम्	हरीहरन, रविन्द्र साठे, रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु

4: SIDE B

१.	नटराज स्तुति	आशा भोंसले
२.	श्री शिव नीरांजनम् (आरती)	सुरेश वाढकर, हंसा दवे, विराज उपाध्याय, बिजल उपाध्याय
३.	मंत्र पुष्पांजलि	गौरव ध्रु
४.	प्रदक्षिणा श्लोक	रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु
५.	क्षमापन श्लोक	रूपकुमार राठोड, गौरव ध्रु

संगीतः पुरुषोत्तम उपाध्याय सहायक संगीतकार : प्रभाकर रेगे-अशोक पत्की
प्रवक्ताः हरीश भीमाणी